गद्यखंड :-	काव्यखंड:-
1. बातचीत - बालकृष्ण भट्ट निबंध (ललित)	**1. कड़बक** - मलिक मुहम्मद जायसी भक्तिकाल (प्रेममार्गी) (पद्मावत)
2. उसने कहा था - चन्द्रधर शर्मा गुलेरी कहानी 1915	**2. पद** - सूरदास भक्तिकाल (कृष्ण भक्तिशाखा) (सूरसागर)
3. संपूर्ण क्रांति - 'जयप्रकाश नारायण ऐतिहासिक भाषण	**3. पद** - तुलसीदास भक्तिकाल (रामभक्तिशाखा) (विनय पत्रिका)
4. अर्धनारीश्वर - रामधारी सिंह दिनकर निबंध	**4. छप्पय** - नाभादास भक्तिकाल (रामभक्तिशाखा) (भक्तमाल)
5. रोज - सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय कहानी (गैंग्रीन)	**5. कवित्त** – कवि भूषण रीतिकाल (रीतिबद्ध कवि)
6. एक लेख और एक पत्र - भगत सिंह निबंध और पत्र	**6. तुमुल कोलाहल कलह में** - जय शंकर प्रसाद आधुनिक काल (छायावाद) (कामायनी)
7. ओ सदानीरा - जगदीशचंद्र माथुर निबंध (बोलते क्षण से)	**7. पुत्र-वियोग** - सुभद्रा कुमारी चौहान आधुनिक काल (राष्ट्रीय भाव धारा) (मुकुल)
8. सिपाही की माँ - मोहन राकेश एकांकी (अंडे के छिलके)	**8. उषा** - शमशेर बहादुर सिंह आधुनिक काल (प्रयोगवादी)
9. प्रगीत और समाज - नामवर सिंह निबंध (वाद विवाद संवाद)	**9. जन-जन का चेहरा** - गजानन माधव मुक्तिबोध आधुनिक काल (प्रयोगवादी)
10. जूठन - ओमप्रकाश बाल्मीकि आत्मकथा	**10. अधिनायक** - रघुवीर सहाय आधुनिक काल (नई कविता) (आत्महत्या के विरोध)
11. हँसते हुए मेरा अकेलापन – मलयज डायरी लेखन	**11. प्यारे नन्हें बेटे को** - विनोद कुमार शुक्ल आधुनिक काल (वह आदमी कोट पहनकर)
12. तिरिछ - उदय प्रकाश कहानी आधुनिक त्रासदी	**12. हार-जीत** - अशोक वाजपेयी आधुनिक काल (कही नहीं वहीं)
13. शिक्षा - जे. कृष्णमूर्ति संभाषण	**13. गाँव का घर** - ज्ञानेंद्रपति आधुनिक काल (संशयात्मा)

सेवा में

प्रधानाचार्य महोदय

क, ख. ग. विद्यालय, पटना

दिनांक : अगस्त 16, 2018

विषय - फीस माफ़ी हेतु

श्रीमान् जी/ महोदय,

आप से विनम्र निवेदन है कि मैं आप के विद्यालय के कक्षा 12वीं का छात्र हूँ। मेरे पिताजी मजदूरी का कार्य करते हैं। जिसके चलते उनकी कोई निश्चित आय नहीं है। हमारे परिवार में उनकी आमदनी से ही पूरे परिवार का गुजर बसर होता है। मेरे अलावा भी परिवार में 5 अन्य सदस्य हैं, जिनके भरण पोषण की जिम्मेदारी भी पिताजी पर ही है। ऐसे में मेरी फीस भरने के लिए वो समर्थ नहीं हैं। मेरे पिछले साल बोर्ड परीक्षा में 90 प्रतिशत आये थे। साथ ही खेल कूद में भी मैं हमेशा अव्वल रहा हूँ।

अतः आप से प्रार्थना है कि मेरी विद्यालय की फीस पूर्णतः माफ़ करने की कृपा करें। इसके लिए मैं आप का सदा आभारी रहूंगा।

आपका आज्ञाकारी शिष्य

क, ख. ग

कक्षा-

क्रमांक

उसने कहा था

प्रस्तुत कहानी "**उसने कहा था**" ब्रिटिश सेना में कार्यरत एक फौजी की कहानी है। ब्रिटिश फौज की सिक्ख रेजीमेंट के एक जमादार लहना सिंह के अपूर्व शौर्य, एक सैनिक की महत्त्वाकांक्षा एवं मनोदशा की सफल अभिव्यक्ति है यह कहानी। अदम्य साहस का इस कहानी में पं० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने सजीव चित्रण किया है। बारह वर्ष की आयु में (किशोरावस्था) लहना सिंह अपने मामा के यहाँ आया था। उसकी भेंट एक आठ वर्ष की बालिका से एक दूकान पर होती है। वह भी अपने मामा के घर आई हुई थी। इस बीच उसकी मुलाकात उस लड़की से प्रायः बाजार में हो जाया करता था वह उससे पूछ बैठता था कि उसकी शादी पक्की हो गई। उत्तर में लड़का शरमाकर धत् कहकर चली जाती थी। एक दिन उसके पूछने पर उस लड़का ने कहा कि कल (एक दिन पहले) उसकी सगाई हो गई है। यह सुनकर १९ काफी उद्विग्न हो उठा। कालान्तर में लहना सिंह ब्रिटिश फौज के सिक्ख .रेजीमेन्ट में भर्ती हो गया। बीच में वह छुट्टी लेकर घर आया हुआ था। लड़ाई पर जाते समय वह सूबेदार हजारा सिंह के घर पर रुका। सूबेदार की पत्ना पर दृष्टि जाते ही वह स्तम्भित रह गया। सूबेदार की पत्नी ने उससे आग्रह किया कि उसके पति एवं एकमात्र पुत्र जो सिक्ख रेजिमेंट में कार्यरत हैं, उनकी सुरक्षा का विशेष ध्यान रखेगा। युद्ध क्षेत्र में 'लहना सिंह' ने अद्वितीय शौर्य का परिचय दिया। शत्रुओं की जर्मन सेना के आक्रमण को निष्फल कर दिया एवं अपने साथियों के सहयोग से बड़ी संख्या में उन्हें मार गिराया, हताहत किया। किन्तु स्वयं भी गंभीर रूप से घायल हो गया। सूबेदार को भी गोली लगी थी। डॉक्टरों की राहत टीम के आने पर वह स्वयं न जाकर सूबेदार एवं अन्य लोगों को गाड़ी पर भिजवा दिया। वह आत्म-संतोष से गर्वित था। उसने सूबेदार की पत्नी द्वारा किए गए आग्रह एवं दिए गए वचन का पूरी तरह पालन किया। अन्ततः उसका प्राणांत हो गया।

अर्द्धनारीश्वर

दिनकर **अर्द्धनारीश्वर** निबंध के माध्यम से यह बताते हैं कि नर-नारी पूर्ण रूप से समान हैं एवं उनमें एक के गुण दूसरे के दोष नहीं हो सकते। अर्थात् नरों में नारियों के गुण आएँ तो इससे उनकी मर्यादा हीन नहीं होती बल्कि उसकी पूर्णता में वृद्धि होती है। दिनकर को यह रूप कहीं देखने को नहीं मिलता है। इसलिए वे क्षुब्ध हैं। उनका मानना है कि संसार में सर्वत्र पुरुष हैं और स्त्री। वे कहते हैं कि नारी समझती है कि पुरुष के गुण सीखने से उसके नारीत्व में बट्टा लगेगा। इसी प्रकार पुरुष समझता है कि स्त्रियोचित गुण अपनाकर वह स्त्रैण जायेगा। इस विभाजन से दिनकर दुखी है। यही नहीं भारतीय समाज को जाननेवाले तीन चिंतकों रवीन्द्रनाथ, प्रेमचंद, प्रसाद के चिंतन से भी दुखी हैं। दिनकर मानते हैं कि यदि ईश्वर ने आपस में धूप और चाँदनी का बँटवारा नहीं किया तो हम कौन होते हैं आपसी गुणों को बाँटने वाले। वे नारी के पराधीनता का संक्षिप्त इतिहास बताने के संदर्भ में कहते हैं कि वर्चस्ववादी तरीके अपनाकर नारी को गुलाम बना लिया है। जब कृषि व्यवस्था का आविष्कार किया जिसके चलते नारी घर में और पुरुष बाहर रहने लगा। यहाँ से जिंदगी दो टुकड़ों में बँट गई। नारी पराधीन होकर अपने समस्त मूल्य भुल गयी। अपने अस्तित्व की अधिकारिणी भी नहीं रही। उसे यह लगने लगा कि मेरा अस्तित्व पुरुष को होने को लेकर है। समाज न भी नारी को भोग्या समझकर उसका उपभोग खूब किया। वसुंधरा भोगीयों ने नारी को आनंद की खान मानकर उसका जी भर उपभोग किया। दिनकर मानते हैं कि नर और नारी एक ही द्रव्य की दली दो प्रतिभाएँ हैं। जिसे भी पुरुष अपना कर्मक्षेत्र मानता है, वह नारी का भी क्षेत्र है। अतः अर्द्धनारीश्वर केवल इसी बात का प्रतीक नहीं हैं कि नारी और नर जब तक अलग हैं तब तक दोनों अधूरे हैं बल्कि इस बात का भी कि जिस पुरुष में नारीत्व की ज्योति जगे बल्कि यह कि प्रत्येक नारी में भी पौरुष का स्पष्ट आभास हो।

महंगाई

भारत जब आजाद हुआ है तब से दिन प्रतिदिन हर वस्तु की कीमतों में लगातार बढ़ोतरी होती जा रही है। वस्तु की कीमतें लगातार इस प्रकार से बढ़ रही है कि निम्न स्तर और मध्यम स्तर के लोगों के लिए हर कोई वस्तु खरीदना मुश्किल हो गया है। दूसरी तरफ सैलरी और कमाई में जितना इजाफा नहीं हुआ है। उससे ज्यादा वस्तुओं की कीमतें महंगी होती जा रही है।देखा जाए तो पेट्रोल और डीजल के दाम भी पिछले कई दिनों से इतनी तेजी पर है कि हर कोई व्यक्ति पेट्रोल और डीजल अपने वाहन में भरवाने से हिचकिचा रहा है। दिन प्रतिदिन बढ़ती महंगाई गरीबों के लिए समस्या पैदा कर रही है। गरीब लोगों के लिए हर वस्तु का खरीदना मुश्किल होता जा रहा है। क्योंकि देश में इस प्रकार से बढ़ती महंगाई जिसके बीच गरीब व्यक्ति और अधिक गरीब होता जा रहा है। महंगाई को इस तरह से बढ़ने से रोकने के लिए सरकार को कई प्रकार के कदम उठाने की आवश्यकता है। सरकार को नियमित रूप से यह बात अवश्य चेक करनी चाहिए कि कालाबाजारी कितनी हो रही है। क्योंकि आज के समय में भी किसान से अनाज बहुत ही कम दाम में खरीदा जाता है। लेकिन बाजार में जाकर उसी अनाज की कीमत कई गुना हो जाती है। बीच में बिचौलियों की संख्या अधिक हो जाने की वजह से गरीबों को और अधिक गरीबी झेलनी पड़ रही है। इसी प्रकार से हर सामान के उत्पादन करता से कम दाम में खरीदकर बिचौलिए बाजार में उसी वस्तु को ज्यादा दाम में बेच रहे हैं और इसी वजह से दिन प्रतिदिन महंगाई बढ़ती जा रही है।

पर्यावरण

पर्यावरण का अर्थ है सभी प्राकृतिक परिवेश जैसे भूमि, वायु, जल, पौधे, पशु, ठोस पदार्थ, अपशिष्ट, धूप, वन और अन्य चीजें। स्वस्थ वातावरण प्रकृति के संतुलन को बनाए रखता है और साथ ही पृथ्वी पर सभी जीवित चीजों को विकसित, पोषण और विकसित करने में मदद करता है। हालांकि, आजकल कुछ मानव निर्मित तकनीकी प्रगति पर्यावरण को कई तरीकों से खराब कर रही है जो अंततः प्रकृति के संतुलन या संतुलन को परेशान करती है। हम इस ग्रह पर भविष्य में जीवन के अस्तित्व के साथ-साथ अपने जीवन को भी खतरे में डाल रहे हैं। यदि हम प्रकृति के अनुशासन से बाहर कुछ भी गलत तरीके से करते हैं, तो यह पूरे वातावरण को परेशान करता है जिसका अर्थ है वायुमंडल, जलमंडल और लेपोस्फियर। प्राकृतिक पर्यावरण के अलावा, एक मानव निर्मित पर्यावरण भी मौजूद है जो प्रौद्योगिकी, कार्य पर्यावरण, सौंदर्यशास्त्र, परिवहन, आवास, उपयोगिताओं, शहरीकरण आदि से संबंधित है। मानव निर्मित पर्यावरण प्राकृतिक पर्यावरण को काफी हद तक प्रभावित करता है जो हम सभी को एक साथ बचाना चाहिए। प्राकृतिक पर्यावरण के घटकों का उपयोग एक संसाधन के रूप में किया जाता है, लेकिन यह कुछ बुनियादी भौतिक आवश्यकताओं और जीवन के उद्देश्य को पूरा करने के लिए मानव द्वारा भी शोषण किया जाता है। हमें अपने प्राकृतिक संसाधनों को चुनौती नहीं देनी चाहिए और पर्यावरण को इतना प्रदूषण या कचरा डालना बंद करना चाहिए। हमें अपने प्राकृतिक संसाधनों को महत्व देना चाहिए और प्राकृतिक अनुशासन में रहकर उनका उपयोग करना चाहिए।

समाचार पत्र

अब के दिनों में अखबार जीवन की आवश्यकता बन गया है। यह लगभग सभी भाषाओं में बाजार में उपलब्ध है। एक समाचार पत्र एक समाचार का प्रकाशन होता है जो कागज पर छप जाता है और सभी को उनके घर पर वितरित किया जाता है। विभिन्न देशों की अपनी समाचार प्रकाशन एजेंसियां हैं। समाचार पत्र हमें अपने देश और साथ ही पूरी दुनिया में क्या हो रहा है, इसके बारे में बताता है। हमें खेल, राजनीति, धर्म, समाज, अर्थव्यवस्था, फिल्म उद्योग, फिल्में, भोजन, रोजगार आदि के विषय से संबंधित सटीक जानकारी बताएं। इससे पहले, समाचार पत्रों को केवल समाचार विवरणों के साथ प्रकाशित किया गया था, वर्तमान में इसमें विभिन्न विषयों के बारे में समाचार और विचार शामिल हैं। बाजार में विभिन्न समाचार पत्रों की लागत उनके समाचार विवरण और क्षेत्र में लोकप्रियता के अनुसार अलग-अलग होती है। वर्तमान दैनिक मामलों वाले समाचार पत्र प्रतिदिन छपते हैं लेकिन उनमें से सप्ताह में दो बार, सप्ताह में एक बार या महीने में एक बार छपते हैं। समाचार पत्र लोगों की आवश्यकता और आवश्यकता के अनुसार एक से अधिक उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं। समाचार पत्र बहुत प्रभावी हैं और शक्तिशाली दुनिया भर से एक ही स्थान पर सभी जानकारी देते हैं। इसकी जानकारी देने की तुलना में, इसकी लागत बहुत कम है। यह हमारे आसपास की सभी घटनाओं के बारे में हमें अच्छी तरह से सूचित करता है।

छठ पूजा

छठ पूजा हिंदुओं का एक प्रसिद्ध त्योहार है औऱ भारत के कई हिस्सों जैसे झारखंड, ओडिशा, असम, बिहार और उत्तर प्रदेश में बहुत धूमधाम से मनाया जाता है साथ ही छठ पूजा पर्व को मॉरीशस और नेपाल में भी इसको मनाया जाता है। छठ पूजा पर्व चार दिनों तक चलता है और यह पर्व आमतौर पर अक्टूबर-नवंबर के महीने में आता है। छठ पूजा पर्व को डाला छठ के नाम से भी जाना जाता है औऱ छठ पूजा पर्व पर उगते सूर्य की पूजा की जाती है। यह पवित्रता, सूर्य देव की भक्ति से जुड़ा हुआ त्यौहार है जिसे इस धरती पर जीवन का स्रोत माना जाता है और यह देवता के रूप में माना जाता है जो हमारी सभी इच्छाओं को पूरा करता है। यह त्यौहार पृथ्वी को ऊर्जा प्रदान करने और जीवन देने के लिए सूर्य देव का धन्यवाद व्यक्त करने के उद्देश्य से मनाया जाता हैं ताकि लोगों को रहने के लिए उपयुक्त वातावरण उपलब्ध हो सके और यह त्यौहार इस विश्वास के साथ मनाया जाता है कि सूर्य देव इच्छाओं को पूरा करते हैं। सूर्य देव के साथ ही लोग इस दिन ''छठी मैया'' की पूजा करते हैं क्योंकि छठी मैया सूर्य देव की बहन है जो बच्चो कि रक्षा करने वाली देवी के नाम से जानी जाती है इसलिए इस दिन सूर्य देव को प्रसन्न करने के साथ-साथ लोग छठी मैया की भी पूजा करते है। इस त्योहार पर भक्त नदियों और तालाबों में घाटों पर इक्ट्ठा होते हैं और पवित्र स्नान करते हैं उसके बाद प्रसाद तैयार करते है और सूर्य भगवान और छठी मैया को अर्पित करते है।

स्वच्छ भारत अभियान

स्वच्छ भारत अभियान को नरेंद्र मोदी जी ने एक राष्ट्रव्यापी सफाई अभियान के रूप में शुरू किया था जिसे स्वच्छ भारत की कल्पना की दृष्टि से लागू किया गया था। स्वच्छ भारत का सपना गाँधी जी का था जिसका अर्थ था पूरे भारत का स्वच्छ होना। महात्मा गाँधी जी ने स्वच्छ भारत के मिशन को पूरा करने के लिए बहुत प्रयत्न किए लेकिन उस समय पर लोगों को स्वच्छ भारत मिशन में कोई दिलचस्पी नहीं थी जिसकी वजह से गाँधी जी का सपना पूरा नहीं हुआ था इसलिए भारत सरकार ने गाँधी जयंती के दिन महात्मा गाँधी जी के स्वच्छ भारत के सपने के लिए स्वच्छ भारत अभियान की घोषणा की। स्वच्छ भारत अभियान को गाँधी जी की 145वीं जयंती पर 2 अक्तूबर, 2014 को शुरू किया गया। स्वच्छ भारत अभियान में भाग लेना सभी लोगों के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है क्योंकि इस मिशन को केवल तभी सफल बनाया जा सकता है जब सभी लोग साथ मिलकर इसमें भाग लेंगे।

स्वच्छ भारत अभियान को सफल बनाने के लिए बहुत सारे नेताओं, अभिनेताओं, अभिनेत्रियों और आम जनता ने अपना पूरा योगदान दिया है। इस मिशन के लिए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी जी ने जितने हो सकें उतने सफल प्रयास किए हैं।

विज्ञान वरदान या अभिशाप

दिन प्रतिदिन विज्ञान की टेक्नोलॉजी बढ़ती जा रही है, जिसकी वजह से मनुष्य को हजारों सुख सुविधाएं मिल रही है। लेकिन दूसरी तरफ विज्ञान की वजह से मनुष्य सभ्यता का नाश हो रहा है, जिसकी वजह से मनुष्य का जीवन विनाश की ओर जा रहा है और मनुष्य जाति को नाभिकीय यंत्रों से खतरा पैदा हो रहा है। यदि हम विज्ञान के फायदे और नुकसान की बात करें तो जितने विज्ञान के फायदे मिलेंगे, उतने ही आपको नुकसान भी मिल जाएंगे। विज्ञान के द्वारा बनाए गए परमाणु बंब, जिसे मनुष्य शक्ति के तौर पर मानता है। लेकिन इसका दूसरी तरफ गलत उपयोग जापान के हिरोशिमा और नागासाकी जैसे उदाहरण के रूप में उभरता है। विज्ञान के हजारों सुविधाएं और वरदान है। विज्ञान की वजह से ही यह हजारों सुख सुविधाएं संभव हुई है। मनुष्य को अंधकार से जीत दिलाने का काम विज्ञान का ही है। विज्ञान की वजह से ही विद्युत का आविष्कार हुआ है और हजारों उपकरण का आविष्कार हुआ है। विज्ञान ने ही इतनी सारी टेक्नोलॉजी को बढ़ाया है लेकिन दूसरी तरफ उन सभी का नुकसान भी है।

वसंत ऋतु

भारत में फरवरी और मार्च में वसंत ऋतु आता है। वसंत ऋतु को ऋतुओं का राजा या ऋतुराज बसंत भी कहा जाता है। इस ऋतु के आने से प्रकृति में कई सारे बदलाव होते हैं। वृक्षों पर नए पत्ते आ जाते हैं, आम के पेड़ पर बौर लग जाते हैं, सरसों के खेतों में पीले-पीले खूबसूरत फूल खिल उठते हैं। कोयल की कू-कू बड़ी ही प्यारी लगती है। इन दिनों आसमान साफ़ होता है और दिन में पक्षी उड़ते हुए दिखाई देते हैं और रात में चाँद की चांदनी मनमोहक दिखाई देती है। वसंत ऋतु के आगमन से किसानो की फसलें भी पकने लगतीं हैं। पेड़-पौधे, सभी जीव-जंतु और मनुष्य इस मौसम में जोश और उल्लास से भरे होते हैं। बसंत ऋतु बहुत ही सुहावना होता है। यह स्वास्थ्य के लिए भी एक अच्छा मौसम होता है क्योंकि इन दिनों वातावरण का तापमान सामान्य होता है। इस समय स्कूल में परीक्षाएं भी होती हैं और परीक्षा खत्म होते ही गर्मी की छुट्टियाँ शुरू हो जाती हैं। वसंत ऋतु में होली का त्यौहार पूरे देश में बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। बसंत पंचमी के अवसर पर माँ सरस्वती की पूजा की जाती है और बेहतर भविष्य और खुशहाली की कामनाएं की जातीं हैं।

विद्यार्थी जीवन

किसी भी इंसान के लिए विद्यार्थी जीवन एक स्वर्णिम काल की तरह होता है क्योंकि इस समय वो अपने भविष्य की आधारशिला रखता है। विद्यार्थी जीवन में ही एक छात्र में शारीरिक और मानसिक गुणों के विकास के साथ-साथ आध्यात्मिक गुणों का भी विकास होता है। इस सब में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण योगदान अध्यापक का होता है, जो अपने सभी विद्यार्थियों को शिक्षा देने के साथ-साथ उन्हें सही रास्ते पर भी चलाते हैं। किसी भी इंसान के लिए, शिक्षा हासिल करना आसान नहीं होता इसीलिए विद्यार्थियों को अपनी जिंदगी में एक कामयाब इंसान बनने के लिए दिन रात मेहनत करनी पड़ती है। किसी भी देश के लिए विद्यार्थी बहुत महत्व रखते हैं क्योंकि वे पढ़ लिख कर अपने देश के गौरव को ऊंचा बनाते हैं। इसके लिए कोई विद्यार्थी वैज्ञानिक बनता है, कोई डॉक्टर बनता है तो कोई इंजीनियर। इसीलिए अध्यापक अपने छात्रों में सहयोग, संयम, विनम्रता, सेवा और सह अस्तित्व जैसे गुणों को विकसित करने के लिए प्रयास करते हैं। इसमें कोई शक नहीं कि आज के विद्यार्थी आने वाले कल में देश का भविष्य होते हैं।

अनुशासन

एक अच्छा जीवन जीने के लिए जरूरी है कि व्यक्ति के जीवन में अनुशासन हो। जो लोग अनुशासन का पालन करते हैं वह अपने सभी कामों को समय पर करते हैं और अच्छी तरह से करते हैं। जिन लोगों में अनुशासन होता है उनके अंदर आज्ञाकारी गुण अपने आप ही आ जाते है। इस वजह से ऐसे लोग जब किसी महत्वपूर्ण काम को करते हैं तो वो अपने बड़ों की आज्ञा का पालन करके अपने काम को अच्छी तरह से करते हैं। इसके विपरीत जो लोग अनुशासनहीन होते हैं और अपने बड़ों की कोई भी बात नहीं मानते उन लोगों को जीवन में बहुत सारी परेशानियों का सामना पड़ जाता है। फिर ऐसे लोग जिंदगी के किसी भी क्षेत्र में सफलता हासिल नहीं कर पाते। इसीलिए अनुशासन का महत्व हर इंसान के जिंदगी में होना बहुत ही ज्यादा जरूरी है। जिंदगी में दूसरों से आगे बढ़ने के लिए हमें चाहिए कि हम हमेशा अनुशासन में रहें। अपने अध्यापकों और माता-पिता के आदेशों पालन करने से हम अपने जीवन में काफी प्रगति कर सकते हैं। अनुशासन हमारे दैनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और इसीलिए हर दिन की दिनचर्या में इसका होना आवश्यक है।

कडबक

प्रस्तुत कविता ''कड़बक के महान लेखक ''मलिक मुहम्मद जायसी है। लेखक ने एक आँख का होने पर भी काव्य गुना है । जिसने भी यह काव्य सुना ,वही मोहित हो गया। लेखक कहते है कि विधाता ने चंद्रमा के समान मुझे बनाकर कलंकी कर दिया। वे दृढ़ आत्मविश्वास के साथ कहते है कि चन्द्रमा में दाग होते हुए भी वो संसार को प्रकाशित करता है। विधाता ने समुद्र के पानी में खारेपन का दोष किया तभी तो वह ऐसा असूझ और अपार हुआ। सुमेरू पर्वत त्रिशूल से मारा गया तभी तो वो सोने का होकर आकाश तक ऊँचा हुआ। इस प्रकार लेखक यह कहते है कि जिसमे गुण है , उसमे अवगुण भी है। वे अपने एक आँख को दर्पण के समान समझते है और कहते है कि जिस प्रकार दर्पण में किसी की छवि स्वच्छ आती है उसी प्रकार कवि की आँख भी स्वच्छता और पारदर्शिता का प्रतीक है। साथ ही साथ जायसी जी यह कहते है कि इस नश्वर जगत में जिस प्रकार फूलो के सुगंध रह जाते है , उसी प्रकार इन्सान की भी केवल कीर्ति ही यहाँ रह जाती है। इस कीर्ति से ही उनकी पहचान होती है। कवि कहते है कि जो भी इसको पढ़ेगा, वो उसे दो शब्दों में जरुर याद करेगा। कवि का अपने कलेजे के खून से रचे इस काव्य के प्रति यह आत्मविश्वास अत्यंत सार्थक और बहुमूल्य है।

पुत्र वियोग

प्रस्तुत कविता 'पुत्र वियोग' सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित है। कवयित्री ने अपने पुत्र के असामयिक निधन के बाद इसे लिखा है।यह काव्य हर उस माँ के पुत्र के लिये है जिनका पुत्र असमय मृत्यु को प्राप्त कर जाता है। वह कहती है कि सारे संसार मे खुशियाँ छाई है, ऐसे मे एक दुखी माँ के लिए ये सारी खुशियाँ बेकार है। वह अपने पुत्र का हर पल ध्यान रखती थी। बेटा जब भी माँ कहकर आवाज लगाता था तब सारा काम-काज छोडकर वो बेटे के पास चली जाती थी। बेटे की भलाई की कामना करते हुए वो देवो को प्रणाम किया। उनके सामने उनके बेटे को कोई नही बचा सका। वो असहाय बैठी रह गई। वह पुत्र वियोग मे तडपती रही। वो अपने मन को समझा नही पाती है। वो कहती है कि अगर कुछ पल के लिये उनका बेटा वापस आ जाए तो वो उसे समझाती कि माँ को छोडकर ऐसे कही मत जा, तेरे बिना माँ के मन को समझाना बहुत कठिन है। भाई-बहन, पिता कुछ पल के बाद भूल सकते है पर रात दिन साथ रहने वाली माँ कैसे अपने बेटे को भूल सकती है।

जयप्रकाश नारायण की पत्नी का क्या नाम था? वे किसकी पत्री थी? 21/19

Ans- जयप्रकाश नारायण की पत्नी का नाम प्रभावती था | वह प्रसिद्ध गांधीवादी विचारक ब्रजकिशोर प्रसाद की पुत्री थीं।

नारी की पराधीनता कब से आरम्भ हुई? **Ans -** मानव जाति ने कृषि का आविष्कार किया तब से नारी की पराधीनता आरम्भ हो गई। कृषि के आविष्कार के चलते नारी घर में रहने लगी।

भगत सिंह की विद्यार्थियों से क्या अपेक्षाएँ हैं?

Ans – भगत सिंह कहते हैं कि हिन्दुस्तान को ऐसे देशसेवकों की जरूरत है जो तन-मन-धन -देश पर अर्पित कर दें और पागलों की तरह सारी उम्र देश की आजादी के लिए या देश के विकास में न्योछावर कर दे। सभी देशों को आजाद करने वाले वहाँ के विद्यार्थी और नौजवान ही हुआ करते हैं। वे ही क्रांति कर सकते हैं।

मानक और सिपाही एक-दूसरे को क्यों मारना चाहते हैं? युद्ध दो देशो के बीच हो रहा था| मानक और सिपाही अलग अलग देश से थे | दोनों अलग अलग देश के कारण एक दुसरे को दुश्मन समझे है और एक-दूसरे को मारना चाहते हैं|

कुंती का परिचय दें।

Ans - कुंती 'सिपाही की माँ' शीर्षक एकांकी में एक प्रमुख पात्र है। वह एक अच्छी पड़ोसन के रूप में रंगमंच पर प्रस्तुत हुई है। यद्यपि कुंती की भूमिका थोड़े समय के लिये है। तब भी उसे थोड़े में आँका नहीं जा सकता। वह बिशनी की पुत्री मुन्नी के विवाह के लिय चिंतित है। वह स्वयं मुन्नी के लिये वर-घर खोजने को भी तैयार है। वह बिशनी को सांत्वना भी देती है। ।

'हृदय की बात' का क्या अर्थ है?

Ans -घनघोर कोलाहल, अशांति और कलह के बीच हृदय की बात का कार्य मस्तिष्क को शांति पहुंचाना, उसे आराम देना है। मस्तिष्क व विचारों को कोलाहल से घिरा जाता है तो हृदय की बात उसे आराम देती है। हृदय कोमल भावनाओं का प्रतीक है जो मस्तिष्क को विचारों के कोलाहल से दूर करता है।

भूषण ने शिवाजी की तुलना मृगराज से क्यों की है?

जिस प्रकार हाथी सिंह से ज्यादा शक्तिवाला, भारी भरकम वजनी होते हुए भी सिंह द्वारा आखिर मारा जाता है उसी प्रकार हमारे शिवाजी सिंह के समान हैं जो हमेशा दुश्मनों को मार गिराते हैं। यहाँ शक्ति का उतना महत्व नहीं है जितना कि सिंह की चुस्ती-फुर्ती का, उसके मस्तिष्क का। अत: शिवराज भी इसी चुस्ती-फुर्ती से दुश्मनों पर विजय प्राप्त करते हैं इसलिए कवि ने शिवराज की तुलना मृगराज से की है।

प्यार का इशारा और क्रोध का दुधारा से क्या तात्पर्य है?

Ans - प्यार का इशारा और क्रोध का दुधारा से कवि का तात्पर्य है कि चाहे वह यानी जनता जिस देश में निवास करती हो, उनके प्यार का इशारा यानी मानवतावादी दृष्टिकोण एक होता है। उसमें किसी प्रकार का बदलाव नहीं होता।

हरचरना कौन है? **2021/20**

Ans - हरचरना 'अधिनायक' शीर्षक कविता में एक आम आदमी का प्रतिनिधित्व करता है। वह एक स्कूल जाने वाला बदहाल गरीब लड़का है। राष्ट्रीय त्योहार के दिन झंडा फहराए जाने के जलसे में राष्ट्रगान दुहराता है। हरचरना की पहचान 'फटा सुथन्ना' पहने एक गरीब छात्र के रूप में है।

अधिनायक कौन है? Ans - लोकतांत्रिक व्यवस्था में सत्ताधारी वर्ग अधिनायक के रूप में है। उनकी राजसी ठाठ-बाठ, भड़कीले रोब-दाब उसकी पहचान है।

मानक स्वयं को वहशी और जानवर से भी बढ़कर क्यों कहता है?

Ans - मानक और दुश्मन सिपाही एक-दूसरे को घायल करते हैं। मानक भागता हुआ अपनी माँ के पास आता है। दुश्मन सिपाही मानक को वहशी और जानवर कहकर पुकारते हैं। मानक का पौरुष जग उठता है तो घायल अवस्था में भी वह खड़ा होकर सिपाही को मारने का प्रयास करता है और क्रोध की स्थिति में वह स्वयं को वहशी और जानवर से भी बढ़कर कहता है।

बिशनी और मुन्नी को किसकी प्रतीक्षा है? वे डाकिये की राह क्यों देखती हैं? 20/18

Ans - बिशनी को अपने सिपाही पुत्र एवं मुन्नी को सिपाही भाई की प्रतीक्षा है। वे डाकिए की राह चिट्ठी आने को देखती है। क्योंकि उसने पिछली चिट्ठी में लिखा था वे वर्मा की लड़ाई पर जा रहे हैं। माँ और बेटी किसी अनिष्ट की शंका के कारण चिट्ठी का इंतजार करते है|

'उसने कहा था' कहानी का केंद्रीय भाव क्या है?

Ans - 'उसने कहा था' प्रथम विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि में लिखी गयी कहानी है। गुलेरीजी ने लहनासिंह और सूबेदारनी के माध्यम से मानवीय संबंधों का नया रूप प्रस्तुत किया है। लहना सिंह सूबेदारनी के अपने प्रति विश्वास से अभिभूत होता है, क्योंकि उस विश्वास की नींव में बचपन के संबंध है। सूबेदारनी का विश्वास ही लहनासिंह को उस महान त्याग की प्रेरण देता है। कहानी एक और स्तर पर अपने को व्यक्त करती है। प्रथम विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि पर यह एक अर्थ में युद्ध-विरोधी कहानी भी है। क्योंकि लहनासिंह के बलिदान का उचित सम्मान किया जाना चाहिए था परन्तु उसका बलिदान व्यर्थ हो जाता है और लहनासिंह का करुण अंत युद्ध के विरुद्ध में खड़ा हो जाता है। लहनासिंह का कोई सपना पूरा नहीं होता

'बचपन से ही आपका ऐसे वातावरण में रहना अत्यंत आवश्यक है जो स्वतंत्रतापूर्ण हो।' क्यों ?

Ans - उत्तर बचपन से ही स्वतंत्रतापूर्ण वातावरण में रहना आवश्यक है जहाँ भय की गुंजाइश नहीं हो। मनचाहे कार्य करने की स्वतंत्रता नहीं बल्कि ऐसा वातावरण जहाँ स्वतंत्रतापूर्वक जीवन की संपूर्ण प्रक्रिया समझी जा सके। जिससे सच्चे जीवन का विकास संभव हो पाये। क्योंकि भयपूर्ण वातावरण मनुष्य का ह्रास कर सकता है विकास नहीं। इसलिए लेखक जे. कृष्णमूर्ति का यह सत्य और सार्थक कथन है कि बचपन से ही आपका ऐसे वातावरण में रहना अत्यंत आवश्यक है जो स्वतंत्रतापूर्ण हो।

"पंच परमेश्वर" के खो जाने को लेकर कवि चिंतित क्यों है ?

उत्तर- पंच परमेश्वर' का अर्थ है-'पंच' परमेश्वर का रूप होता है। वस्तुत: पंच के पद पर विराजमान व्यक्ति अपने दायित्व-निर्वाह के प्रति पूर्ण सचेष्ट एवं सतर्क रहता है। वह निष्पक्ष न्याय करता है। उस पर सम्बन्धित व्यक्तियों की पूर्ण आस्था रहती है तथा उसका निर्णय 'देव वाक्य' होता है। कवि यह देखकर खिन्न है कि आधुनिक पंचायती राज व्यवस्था में पंच परमेश्वर का सार्थकता विलुप्त हो गई। एक प्रकार से अन्याय और अनैतिकता ने व्यवस्था को निष्क्रिय कर दिया है, पंगु बना दिया है। पंच परमेश्वर शब्द अपनी सार्थकता खो चुका है। कवि उपरोक्त कारणों से ही चिन्तित है।

बूढ़ा मशकवाला क्या कहता है और क्यों कहता है ?

उत्तर-बूढ़ा मशकवाला प्रतीक प्रयोग है। वह देश के बुद्धिजीवी वर्ग से तात्पर्य रखता' है। वह वास्तविक स्थिति से अवगत है। वह कहता है कि किसी की भी जीत नहीं हुई है। सेना विजयी नहीं है बल्कि हारी हुई सेना है। इन पंक्तियों में बूढ़ा मशकवाला देश की जो भयावह स्थिति है, उससे वह अवगत होते हुए सत्य के निकट है। सभी लोग तो धोखा में जी रहे हैं लेकिन मशकवाला .यथार्थ का जानकार है। इसलिए वह कहता है कि जीत न शासक का खेल है। प्रजा के साथ की न नागरिक की, न सेना की हुई। ये सारी बातें झूठे प्रचार तंत्र का खेल है। पर छल है. धोखा है। सबको धोखे में रखा जा रहा है और सत्य को छिपाया जा रहा है |

बिटिया कहाँ-कहाँ लोहा पहचान पाती है ?

उत्तर- बिटिया की समझ (जानकारी) में चिमटा, कलछुल, कढ़ाई, सड़सी, दरवाजे की साँकल (सिकरी), कब्जा, पेंच तथा सिटकिनी आदि में लोहा है। इसके अतिरिक्त सेफ्टी पिन, साईकिल तथा अरगनी के तार में भी वह लोहा पाती है।

प्रात: नभ की तुलना बहुत नीला शंख से क्यों की गई है?

उत्तर- प्रात: नभ की तुलना बहुत नीला शंख से की गई कि कवि के अनुसार प्रात: कालीन आकाश (नभ) गहरा नीला प्रतीत हो रहा है। वह नीले समान शंख के समान पवित्र और उज्ज्वल है। नीला शंख पवित्रता का प्रतीक है। प्रात:कालीन नभ भी पवित्रता का प्रतीक है। लोग उषाकाल में सूर्य नमस्कार करते । शंख का प्रयोग भी पवित्र कार्यों में होता है। अत: यह तुलना उचित है।

माँ के लिए अपना मन समझाना कब कठिन है और क्यों ?

उत्तर- बेटा माँ की अमूल्य धरोहर होता है। उसकी आँखों का तारा होता है। वही उसका सर्वस्व होता है। यदि क्रूर नियति द्वारा वही उससे छीन लिया जाता है, अर्थात् उसके बेटे की असामयिक मृत्यु हो जाती है तब माँ के लिए अपने मन को समझना कठिन हो जाता है।

तुलसी सीता से कैसी सहायता मांगते हैं ?

उत्तर- तुलसी सीता से वचनों से ही सहायता मांगते हैं अर्थात् वाणी की सहायता मांगते हुए सीता माता से वे कहते हैं कि यदि प्रभु मेरा नाम, दशा पूछे तो यह बता देना कि दीनहीन निर्बल हूँ और उन्हीं का नाम लेकर अपना पेट भरता हूँ|

प्रथम पद में किस रस की व्यंजना हुई है ?

उत्तर- सूरदास रचित 'प्रथम पद' में वात्सल्य रस की व्यंजना हुई है। वात्सल्य रस के पदों की विशेषता यह है कि पाठक जीवन की नीरस और जटिल समस्याओं को भूलकर उनमें तन्मय और विभोर हो उठता है। प्रथम पद में दुलार भरे कोमल-मधुर स्वर में सोए हुए बालक कृष्ण को भोर होने की सूचना देते हुए जगाया जा रहा है।

कवि ने अपनी एक आंख की तुलना दर्पण से क्यों की है ?

उत्तर- जायसी को एक ही आंख थी। उन्होंने अपनी एक आँख की तुलना दर्पण से की, क्योंकि जिस तरह दर्पण स्वच्छ और निर्मल होता है उसी तरह कवि की आँख है। कोई व्यक्ति जिस तरह जिस प्रकार दर्पण में अपनी छवि साफ एवं स्पष्ट रूप से देख पाता है उस प्रकार कवि की आँख भी स्वच्छता एवं पारदर्शिता का प्रतीक है।

तिरिछ क्या है ? कहानी में यह किसका प्रतीक है ? उत्तर- 'तिरिछ' छिपकली प्रजाति का जहरीला लिजार्ड है जिसे विषखापर भी कहते हैं। कहानी में 'तिरिछ' प्रचलित विश्वासों और रूढ़ियों का प्रतीक है।

डायरी का लिखा जाना क्यों मुश्किल है ?

उत्तर डायरी मन का कूड़ा है। डायरी में शब्दों और अर्थों के बीच तटस्थता कम रहता है। डायरी में व्यक्ति अपने मन की बातों को कागज पर उतारता है। वह अपने यथार्थ को अपने ढंग से अपने समझने योग्य शब्दों में लिखता है। डायरी खुद के लिए लिखी जाती है, लिए नहीं। डायरी लिखने में अपने भाव के अनुसार शब्द नहीं मिल पाते हैं। यदि शब्दों का भंडार है भी तो उन शब्दों के लायक वे भाव ही न होते हैं। डायरी में मुक्ताकाश होता है, तो सूक्ष्मता भी। शब्दार्थ और भावार्थ मेल के कारण डायरी का लिखा जाना मुश्किल है।

बचपन में लेखक के साथ जो कुछ हुआ, आप कल्पना करें कि आपके साथ भी हुआ हो-ऐसी स्थिति में आप अपने अनुभव और प्रतिक्रिया को अपनी भाषा में लिखिए।

उत्तर- "जुठन" शीर्षक आत्मकथा के माध्यम से लेखक और ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपने बचपन के जो अनुभव प्रस्तुत किये हैं भारतीय समाज के लिये एक चिन्ता का विषय है। बचपन ईश्वर का दिया हुआ एक अद्वितीय उपहार है। बचपन में बालक निश्छल एवं सरल होता है। जीवन का यह बहुमूल्य समय शिक्षा ग्रहण एवं बड़ों द्वारा लाड़-प्यार की प्राप्ति का अवसर है। ऐसे में किसी बालक को दलित अछूत समझ कर प्रताड़ित करना समाजविरोधी, मानवताविरोधी एवं राष्ट्रविरोधी कार्य है। लेखक के साथ उनके बचपन में जो घटनायें घटी वे घोर निंदनीय हैं। अगर मैं उनकी जगह बालक होता तो मेरे मन में वही प्रभाव पडता जो लेखक के दिलोदिमाग पर पड़ा। मैं लेखक की भावनाओं का आदर करता हूँ। समाज की कुरीतियाँ शीघ्र दूर होनी चाहिये। मानव-मानव में भेद करना ईश्वर को अपमानित करने जैसा है।

कला कला के लिए" सिद्धान्त क्या है

'कला-कला के लिए' सिद्धान्त का अर्थ है कि कला लोगों में कलात्मकता का भाव उत्पन्न करने के लिए है। इसके द्वारा रस एवं माधुर्य की अनुभूति होती है, इसीलिए प्रगीत मुक्तकों (लिरिक्स) की रचना का प्रचलन बढ़ा है। इसके लिए यह भी तर्क दिया जाता है कि अब लंबी कविताओं को पढ़ने तथा सुनने की फुरसत किसी के पास नहीं है।

धाँगड़ शब्द का क्या आशय है ?

धाँगड़ शब्द का अर्थ ओराँव भाषा में है-भाड़े का मजदूर।

धाँगड़ एक आदिवासी जाति है, जिसे 18 वीं शताब्दी के अंत में नील की खेती के सिलसिले म दक्षिण बिहार के छोटानागपुर पठार से चम्पारण के इलाके में लाया गया था। धांगड जाति आदिवासी जातियों-ओराँव, मुंडा, लोहार इत्यादि के वंशज हैं, लेकिन ये अपने आप को आदिवासी नहीं मानते हैं। धाँगड़ मिश्रित ओराँव भाषा में बात करते हैं। धाँगड़ों का सामाजिक जीवन बेहद उल्लासपूर्ण है, स्त्री-पुरुष ढलती शाम के मंद प्रकाश में सामूहिक नृत्य करते हैं।

गैंग्रीन क्या होता है ?

उत्तर-पहाड़ियों पर रहने वाले व्यक्तियों को काँटा चुभना आम बात है। परन्तु काँटा चुभने के बाद बहुत दिनों तक छोड़ देने के बाद व्यक्ति का पांव जख्म का शक्ल अख्तियार कर लेता है जिसका इलाज मात्र पाँव का काटना ही है। काँटा चुभने पर जख्म ही गैंग्रीन कहते हैं।

नर और नारी एक ही द्रव्य की ढली दो प्रतिमाएं हैं? कैसे ?

नारी और नर एक ही द्रव्य की ढली दो प्रतिमाएँ हैं । आरंभ में दोनों बहुत कुछ समान थे । आज भी प्रत्येक नारी में कहीं न कहीं कोई एक प्रच्छन्न नर और प्रत्येक नर में कहीं न कहीं एक क्षीण नारी छिपी हुई है ।

जय प्रकाश नारायण कम्युनिस्ट पार्टी में क्यों नहीं शामिल हुए ?

उत्तर- जय प्रकाश नारायण अमेरिका में घोर कम्युनिस्ट थे। वह लेनिन का जमाना था, वह ट्राटस्की का जमाना था। 1924 में लेनिन के मरने के बाद वे मार्क्सवादी बन गये। वे जब भारत लौटे तो घोर कम्युनिस्ट बनकर लौटे, लेकिन वे कम्युनिस्ट पार्टी में नहीं शामिल हुए। वे काँग्रेस में दाखिल हुए। जय प्रकाश नारायण कम्युनिस्ट पार्टी में इसलिए शामिल नहीं हुए क्योंकि उस समय भारत गुलाम था। उन्होंने लेनिन से जो सीखा था वह यह सीखा था कि जो गुलाम देश हैं, वहाँ के जो कम्युनिस्ट हैं, उनको कदापि वहाँ की आजादी की लड़ाई से अपने को अलग नहीं रखना चाहिए। चाहे उस लड़ाई का नेतृत्व 'बुर्जुआ क्लास' करता हो या पूँजीपतियों के हाथ में उसका नेतृत्व हो।

बातचीत अगर हममें वाक्शक्ति न होती तो क्या होता?

उत्तर- हममें वाशक्ति न होती तो मनुष्य गूंगा होता, वह मूकबधिर हो सृष्टि की सबसे महत्वपूर्ण देन उसकी वाक्शक्ति है। इसी वाक्शक्ति के कारण वह समाज में वार्तालाप करता है। वह अपनी बातों को अभिव्यक्त करता है और उसकी वाक् शक्ति भाषा कहलाती है। व्यक्ति समाज में रहता है। इसलिए अन्य व्यक्ति के साथ उसका पारस्परिक सम्बन्ध और कुछ जरूरतें होती हैं जिसके कारण वह वार्तालाप करता है । यह ईश्वर द्वारा दी हुई मनुष्य की अनमोल कृति है। इसी वाक्शक्ति के कारण वह मनुष्य है| यदि हममें इस वाक्शक्ति का अभाव होता तो मनुष्य जानवरों की भाँति ही होता। वह अपनी क्रियाओं को अभिव्यक्त नहीं कर पाता। जो हम सुख-दुख इंद्रियों के कारण अनुभव करते हैं रहने के कारण नहीं कह पाते।

bihorboardnews